29 / 12 / 83 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

संगमयुग में सहज प्राप्ति का अनुभव

➢➢ इस रूहानी संगम की वेला में

➳ _ ➳ मैं श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा

→ दिलाराम बाबा के सम्मुख बैठ

◆ उनको प्यार से निहार रही हूँ

• अपने दिल में बसा रही हूँ

➳ _ ➳ मैं वरदानी आत्मा

→ वरदाता बाप से

◆ सर्व अविनाशी खजानों को

• प्राप्त कर रही हूँ

➳ _ ➳ मैं मास्टर सर्व शक्तिवान आत्मा

→ सर्व शक्तियों के विधाता से

◆ सर्व शक्तियों को

• प्राप्त कर रही हूँ

➳ _ ➳ मैं सर्व प्राप्ति स्वरुप आत्मा

→ सर्व प्राप्तियों के दाता से

◆ सर्व अधिकार

• प्राप्त कर रही हूँ

➢➢ सहज प्राप्ति के इस संगम युग में

➳ _ ➳ मैं जागती ज्योत आत्मा

→ अपनी ज्योति को जगाकर

◆ इस जहान को

• जगा रही हूँ

➳ _ ➳ मैं खुशनसीब आत्मा

→ सदा दिलखुश बन

◆ इस जहान को

• खुश कर रही हूँ

➳ _ ➳ मैं कल्याणकारी आत्मा

→ चढती कला वाली बन

◆ सर्व आत्माओं का

• कल्याण कर रही हूँ

➳ _ ➳ मैं त्रिकालदर्शी आत्मा

→ स्व-प्राप्ति स्वरूप बन

◆ बाप द्वारा सर्व को

• सुख-शांति की अंचली

• दिला रही हूँ

➢➢ इस वरदानी संगम के सीजन में

➳ _ ➳ मैं अनुभवी मूर्त आत्मा

→ शक्तिशाली संकल्प और

→ कर्म रूपी बीज बोकर

◆ अनगिनत प्रत्यक्ष फल

• खा रही हूँ

➳ _ ➳ मैं सहजयोगी आत्मा

→ बिना मेहनत

◆ सहज ही सफलता

• प्राप्त कर रही हूँ

➳ _ ➳ मैं दिलतख़्तनशीन आत्मा

→ विधि का स्विच आन करके

◆ सहज ही सर्व सिद्धियों को

• प्राप्त कर रही हूँ

➳ _ ➳ मैं दृढ संकल्पधारी आत्मा

→ सदा श्रीमत पर चल

◆ मनमत, परमत

◆ वा व्यर्थ संकल्प

• सहज ख़तम कर रही हूँ

➳ _ ➳ मैं स्मृति स्वरुप आत्मा

→ सदा स्मृति के किले के अन्दर रह

◆ माया के सारे रास्ते

• बंद कर दी हूँ

➳ _ ➳ मैं बेहद की दिल वाली आत्मा

→ किसी हद की प्राप्ति की तरफ

◆ कभी भी आकर्षित

• नहीं होती हूँ

➳ _ ➳ मैं अधिकारी आत्मा

→ सदा अपने अधिकार को याद कर

- रूहानी श्रेष्ठ नशा और
- सदा की खुशी का
  - अनुभव कर रही हूँ